(iii) अर्ध संरचित साक्षात्कार
(Semistructured interview)

इस प्रकार के साक्षात्कार को केन्द्रित साक्षात्कार (focussed interview) भी कहते हैं। यह साक्षात्कार संरचित साक्षात्कार तथा असंरचित साक्षात्कार का मिला-जुला रूप होता है। इसमें साक्षात्कार लेने वाले पर न तो संरचित साक्षात्कार की तरह कठोर प्रतिबन्ध होता है और न असंरचित साक्षात्कार की तरह छूट होती है। वह समस्या के स्वरूप तथा परिस्थिति की माँगों के अनुसार संरचित तथा असंरचित साक्षात्कार के मिश्रित रूप का व्यवहार करके आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त करता है। **मर्टन तथा कैंडल** (Merton and Kandal, 1946) ने केन्द्रित साक्षात्कार अर्थात् अर्धसंरचित साक्षात्कार के महत्व पर अधिक बल दिया है और कहा है कि इसमें संरचित साक्षात्कार तथा असंरचित साक्षात्कार दोनों के गुण पाये जाते हैं। इसलिए, अधिकांश परिस्थितियों में अर्धसंरचित साक्षात्कार का व्यवहार किया जाता है।

सूचनादाता की संख्या पर आधारित वर्गीकरण
(Classification based on the number of respondents)

साक्षात्कार में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर साक्षात्कार के निम्नलिखित दो प्रकार हैं—

1. व्यक्ति-साक्षात्कार (Individual Interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार में एक समय में केवल एक व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है। इस साक्षात्कार का सबसे बड़ा गुण यह है कि इसमें साक्षात्कार लेने वाले तथा साक्षात्कार देने वाले के बीच निकट सम्पर्क स्थापित हो जाता है और साक्षात्कार देने वाले पर व्यक्तिगत ध्यान देना संभव होता है। इस प्रकार, सही सूचना पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करना संभव होता है। इसलिए व्यक्ति-साक्षात्कार को अधिक विश्वसनीय माना जाता है। **बोगारडस** (Bogardus) के अनुसार मनोवृत्ति-परिवर्तन (attitude change) के अध्ययन के लिए यह साक्षात्कार बहुत उपयोगी है। लेकिन इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें समय अधिक लगता है और अधिक श्रम करना पड़ता है।

2. समूह-साक्षात्कार (Group interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार में एक ही समय में दो या अधिक व्यक्तियों का साक्षात्कार एक ही साथ लिया जाता है। इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि इसमें खर्च कम लगता है और समय तथा श्रम की बचत होती है। लेकिन इसका गम्भीर दोष यह है कि इसमें साक्षात्कार देनेवाले पर पूरा-पूरा ध्यान देना संभव नहीं होता है और उसके सम्बन्ध में गहन अध्ययन संभव नहीं हो पाता है। अतः

Scanned with CamScanner

व्यक्ति-साक्षात्कार की अपेक्षा सामूहिक साक्षात्कार अविश्वसनीय होता है। अतः अध्ययनों से पता चलता है कि बड़े प्रतिदर्श (large sample) के लिए सामूहिक साक्षात्कार तथा छोटे प्रतिदर्श के लिए व्यक्ति साक्षात्कार का व्यवहार करना बेहतर है।

उद्देश्य पर आधारित वर्गीकरण
(Classification based on purpose)

साक्षात्कार के उद्देश्य के दृष्टिकोण से इसे निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. नैदानिक साक्षात्कार (Diagnostic interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार का उद्देश्य रोग के कारणों की जानकारी प्राप्त करना है। नैदानिक मनोविज्ञान (clinical psychology) तथा मनोविश्लेषण (psychoanalysis) में इस साक्षात्कार का व्यवहार किया जाता है। अतः इस साक्षात्कार-विधि का क्षेत्र सीमित है।

2. उपचार-साक्षात्कार (Treatment interview)—जब किसी मानसिक रोग का निरोपण (diagnosis) हो जाता है तो फिर उसके उपचार के लिए रोगी का साक्षात्कार किया जाता है। इसका उद्देश्य यह पता लगाना होता है कि रोगी के रोग का उपचार कैसे किया जा सकता है। अतः इस साक्षात्कार की उपयोगिता सीमित है।

3. शोध-साक्षात्कार (Research interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार का उद्देश्य शोध आँकड़े (research data) प्राप्त करना है। यहाँ किसी समस्या से संबंधित सूचनाएँ प्राप्त करना प्रधान होता है। **कौरचिन** (Korchin, 2003) के अनुसार इस प्रकार का साक्षात्कार प्रायः अधिक संरचित (structured) होता है।

भूमिका पर आधारित वर्गीकरण
(Classification based on role)

इस दृष्टिकोण से साक्षात्कार के निम्नलिखित चार प्रकार हैं—

1. निदेशात्मक साक्षात्कार (Directive interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार को नियंत्रित साक्षात्कार (controlled interview) भी कहते हैं। यहाँ साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाताओं (respondents) पर पूरा नियंत्रण रखता है। वह पूर्वनिर्धारित प्रश्नों का व्यवहार करता है। उत्तरदाताओं को उसके आदेशों के अनुसार व्यवहार करना पड़ता है। अतः इसमें परिशुद्धता (precision) का गुण पाया जाता है। लेकिन, लचीलापन (flexibility) का अभाव रहता है।

2. अनिदेशात्मक साक्षात्कार (Nondirective interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार को स्वतंत्र साक्षात्कार (free interview) अथवा अनियंत्रित साक्षात्कार (uncontrolled interview) भी कहते हैं। इसमें साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाताओं पर कोई नियंत्रण नहीं रखता है और न कोई निश्चित निर्देशन रखता है। पहले से प्रश्न तैयार नहीं रहते हैं। साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाताओं को अपने विचारों, संवेगों तथा भावों को व्यक्त करने के लिए उत्साहित करता है। अतः इस प्रकार के साक्षात्कार में लचीलापन अधिक पाया जाता है। लेकिन, इसकी परिशुद्धता (precision) सीमित होती है। सामाजिक विघटन (social disorganization), तलाक (divorce), वैवाहिक उपद्रव (marital disturbances). यौन-विकृति (sexual deviations), आदि के अध्ययन के लिए यह साक्षात्कार काफी उपयोगी है (Vatsayan, 1982)।

3. केन्द्रित साक्षात्कार (Focussed interview)—यह साक्षात्कार वास्तव में संरचित (structured) तथा असंरचित (unstructured) साक्षात्कार का मिला-जुला रूप है। इसमें पहले से निर्धारित प्रश्नों का व्यवहार किया जाता है। लेकिन साक्षात्कारकर्ता को छूट होती है कि वह आवश्यकता अनुसार प्रश्नों में परिवर्तन कर सकता है। यह साक्षात्कार रेडियो,

Scanned with CamScanner

टेलीविजन, सिनेमा, आदि के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों के अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी है।

4. पुनरावृत्त साक्षात्कार (Repeated interview)—इस प्रकार के साक्षात्कार में सामाजिक परिस्थिति के विकास तथा उससे उत्पन्न प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। व्यक्ति के व्यवहार पर मनोवृत्ति (attitude), पूर्वधारणा (prejudice), आदि सामाजिक कारकों के प्रभावों के अध्ययन के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है। अध्ययनों से पता चलता है कि मतदान-व्यवहार (voting behaviour) के अध्ययन के लिए भी यह साक्षात्कार लाभदायक है। लेकिन इस साक्षात्कार के द्वारा अध्ययन करने में समय अधिक लगता है तथा अधिक श्रम करना पड़ता है।

स्पष्ट हुआ कि साक्षात्कार के कई प्रकार हैं जिनका व्यवहार आवश्यकता अनुसार किया जा सकता है। शोधकर्ता अपनी समस्या के अनुसार साक्षात्कार की उचित विधि या विधियों का चयन कर लेता है।

Scanned with CamScanner